अध्याय

11

नमक का दारोगा

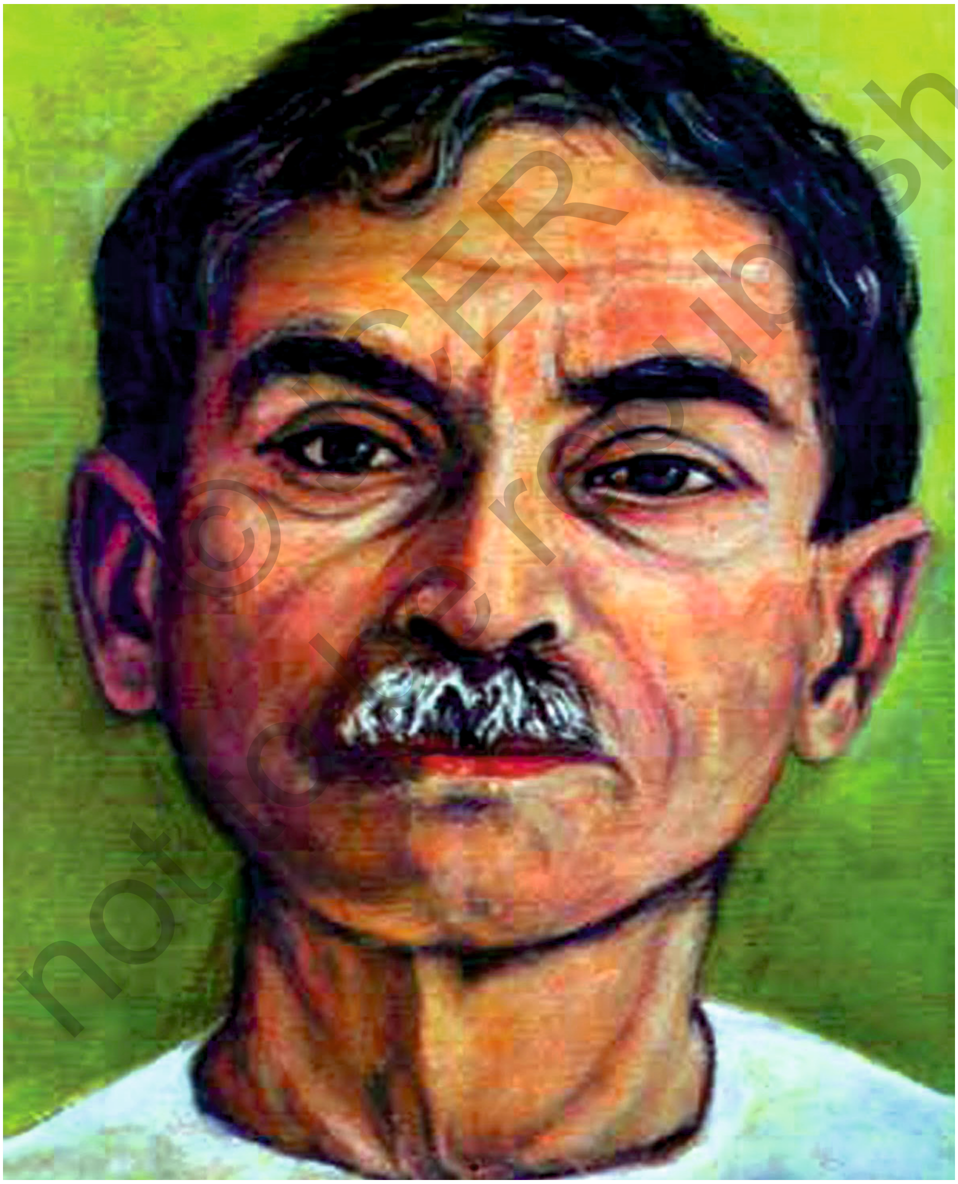

not to be republished © NCERT

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

1. लेखक-परिचय

I. जन्म-प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले (उत्तर प्रदेश) के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था।

II. उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाकमुंशी थे।

III. **शिक्षा**-प्रेमचन्द की आरम्भिक शिक्षा फ़ारसी में हुई। प्रेमचंद के माता-पिता के जब वे सात साल के थे, तभी उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। जब पन्द्रह वर्ष के हुए तब उनका विवाह कर दिया गया और सोलह वर्ष के होने पर उनके पिता का भी देहान्त हो गया।

इसके कारण उनका प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय रहा। उनकी बचपन से ही पढ़ने में बहुत रुचि थी।]। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। उनकी शिक्षा के सन्दर्भ में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- "1910 में अंग्रेज़ी, दर्शन, फ़ारसी और इतिहास लेकर इण्टर किया और 1919 में अंग्रेजी, फ़ारसी और इतिहास लेकर बी. ए. किया। "

IV. **विवाह**- उनका पहला विवाह पंद्रह साल की उम्र में हुआ। 1906 में उनका दूसरा विवाह शिवरानी देवी से हुआ जो बाल-विधवा थीं। वे सुशिक्षित महिला थीं जिन्होंने कुछ कहानियाँ और प्रेमचंद घर में शीर्षक पुस्तक भी लिखी।

V. **कैरियर**- 1899 में बी.ए. पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। 1921 ई. में असहयोग आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी के सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने लेखन को अपना व्यवसाय बना लिया। मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में वे संपादक पद पर कार्यरत रहे। इसी दौरान उन्होंने प्रवासीलाल के साथ मिलकर सरस्वती प्रेस भी खरीदा तथा हंस और जागरण निकाला।

VI. **निधन**- प्रेस उनके लिए व्यावसायिक रूप से लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ। 1933 ई. में अपने ऋण को पटाने के लिए उन्होंने मोहनलाल भवनानी के सिनेटोन कम्पनी में कहानी लेखक के रूप में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिल्म नगरी प्रेमचंद को रास नहीं आई। वे एक वर्ष का अनुबन्ध भी पूरा नहीं कर सके और दो महीने का वेतन छोड़कर बनारस लौट आए। उनका स्वास्थ्य निरन्तर बिगड़ता गया। लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।

© JCERT not to be republished

2. साहित्यिक-परिचय

I. उनके जीवन का राजनीतिक संघर्ष उनकी रचनाओं में सामाजिक संघर्ष बनकर सामने आया जिसमें जीवन का यथार्थ और आदर्श दोनों था।

हिंदी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास का काल-विभाजन प्रेमचंद को ही केंद्र में रखकर किया जाता रहा है (प्रेमचंद - पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग)। यह प्रेमचंद के निर्विवाद महत्त्व का एक स्पष्ट प्रमाण है।

II. वस्तुतः प्रेमचंद ही पहले रचनाकार हैं जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रुमानियत के धुंधलके से निकालकर यथार्थ की ठोस ज़मीन पर प्रतिष्ठित किया। यथार्थ की ज़मीन से जुड़कर कहानी किस्सागोई तक सीमित न रहकर पढ़ने-पढ़ाने की परंपरा से भी जुड़ी।

III. इसमें उनकी हिंदुस्तानी (हिंदी-उर्दू मिश्रित) भाषा का विशेष योगदान रहा। उनके यहाँ हिंदुस्तानी भाषा अपने पूरे ठाट-बाट और जातीय स्वरूप के साथ आई है।

IV. उनका आरंभिक कथा - साहित्य कल्पना, संयोग और रुमानियत के ताने-बाने से बुना गया है। लेकिन एक कथाकार के रूप में उन्होंने लगातार विकास किया और पंच परमेश्वर जैसी कहानी तथा सेवासदन जैसे उपन्यास के साथ सामाजिक जीवन को कहानी का आधार बनाने वाली यथार्थवादी कला के अग्रदूत के रूप में सामने आए।

V. यथार्थवाद के भीतर भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से आलोचनात्मक यथार्थवाद तक की विकास यात्रा प्रेमचंद ने की। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद स्वयं उन्हीं की गढ़ी हुई संज्ञा है। यह कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में किए गए उनके ऐसे रचनात्मक प्रयासों पर लागू होती है जो कटु यथार्थ का चित्रण करते हुए भी समस्याओं और अंतर्विरोधों को अंततः एक आदर्शवादी और मनोवांछित समाधान तक पहुँचा देती है।

सेवासदन, प्रेमाश्रम आदि उपन्यास और पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोगा आदि कहानियाँ ऐसी ही हैं।

VI. बाद की उनकी रचनाओं में यह आदर्शवादी प्रवृत्ति कम होती गई है और धीरे-धीरे वे ऐसी स्थिति तक पहुँचते हैं जहाँ कठोर वास्तविकता को प्रस्तुत करने में वे किसी तरह का समझौता नहीं करते। गोदान उपन्यास और पूस की रात, कफ़न आदि कहानियाँ इसके सुंदर उदाहरण हैं।

© JCERT not to be republished

प्रमुख रचनाएँ:

उपन्यास– सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान

कहानी संग्रह– सोज़े वतन, मानसरोवर-आठ खंड में, गुप्त धन

नाटक– कर्बला, संग्राम, प्रेम की देवी

निबंध– संग्रह कुछ विचार, विविध प्रसंग

पाठ का सार

1. 'नमक का दारोगा' (प्रथम प्रकाशन 1914 ई.) प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है जिसे आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के एक मुकम्मल उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। कहानी में ही आए हुए एक मुहावरे को लें तो यह **धन के ऊपर धर्म की जीत** की कहानी है। धन और धर्म को हम क्रमशः सद्वृत्ति और असद्वृत्ति, बुराई और अच्छाई, असत्य और सत्य इत्यादि भी कह सकते हैं।

© JCERT not to be republished

II. कहानी में इनका प्रतिनिधित्व क्रमशः पंडित अलोपीदीन और मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से मुअत्तल करा देते हैं।

III. लेकिन अंततः सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वे सरकारी महकमे से बर्खास्त वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अपराध-बोध से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं, **परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारेवाला बेमुरौवत, उद्दंड, किंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।**

IV. कहानी के इस अंतिम प्रसंग से पहले तक की समस्त घटनाएँ प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उस भ्रष्टाचार की व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता को अत्यंत साहसिक तरीके से हमारे सामने उजागर करती हैं। **ईमानदार व्यक्ति के अभिमन्यु के समान निहत्थे और अकेले पड़ते जाने की यथार्थ तस्वीर इस कहानी की बहुत बड़ी खूबी है। किंतु प्रेमचंद इस संदेश पर कहानी को खत्म नहीं करना चाहते क्योंकि उस दौर में वे मानते थे कि ऐसा यथार्थवाद हमको निराशावादी बना देता है, मानव - चरित्र पर से हमारा विश्वास उठ जाता है,** हमको चारों तरफ़ बुराई ही बुराई नज़र आने लगती है (‘ उपन्यास ‘ शीर्षक निबंध से) इसीलिए कहानी का अंत सत्य की जीत के साथ होता है।

शब्दार्थ–

ईश्वर प्रदत्त– ईश्वर या प्रकृति द्वारा दिया गया

निषेध– मना

छल-प्रपंच– कोई ऐसा कार्य जो वास्तविक न होने पर भी वास्तविक जान पड़े

पौ-बारह– बहुत अधिक लाभ प्राप्त करना

बरकंदाजी– बंदूक लेकर चलने वाला सिपाही, चौकीदारी

सर्वसम्मानित– सभी द्वारा सम्मानित

प्राबल्य– प्रबलता

फ़ारसीदाँ– फ़ारसी लोग

प्रेम वृत्तान्त– प्रेम कथा

मुख्तार– कलक्टरी में वकील से कम दर्जे का वकील, वह व्यक्ति जिसे किसी व्यक्ति से विशिष्ट अवसरों पर प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने का वैध अधिकार होता है

मजार– दरगाह

पीर– पूज्य, संत

बरकत– तरक्की

गरज़– आवश्यकता, स्वार्थजन्य इच्छा

आत्मवलंबन– अपने पर भरोसा करना

© JCERT not to be republished

शूल- विकट पीड़ा

तमंचा- पिस्तौल

कलवार- शराब बनाने एवं बेचने का धंधा करने वाला

सदाव्रत- हमेशा अन्न बाँटने का व्रत

हरामखोर- हराम की कमाई खाने वाला

अल्हड़- भोला, दुनियादारी नहीं जानने वाला

अलौकिक- जो लोक में न मिलता हो, अद्भुत

अविचलित- स्थिर

रोज़नामचा- दैनंदिनी, दैनिक पुस्तिका

अभियुक्त- लगा हुआ, संलग्न

ग्लानि- दुख, मानसिक पीड़ा

क्षोभ- खलबली, व्याकुलता

अरदली- चपरासी

तजवीज़- फैसला, राय

नमकहलाली- कृतज्ञता

गर्वाग्नि- गर्व की अग्नि

मुअत्तली- निलंबन

परवाना- लिखित आज्ञा, अनुमति

भग्न- खंडित, टूटा हुआ

व्यथित- क्लेशित, दुखी

पछहिएँ- पश्चिमी

धर्मपरायण- धर्म का पालन करने वाला

कातर- परेशान, दुखी

अर्पण- भेंट करना, सौंपना

ठकुरसुहाती- किसी को खुश करने के लिए झूठी या अत्यधिक प्रशंसा करने की क्रिया

मर्मज्ञ- मर्म का ज्ञाता निरादर - अपमान।

उद्दंड- शरारती, ढीठ।

माया-मोह- संसार का आकर्षण।

जाल- चक्कर।

अल्हड़- मस्त।

झिझकना- झेंपना, सकुचाना।

दीन-भाव- दीनता का भाव

मिटना- नष्ट होना।

इज्जत- साख, रुतबा।

धूल में मिलाना- सम्मान नष्ट करना

हाथ आना- उपलब्ध होना।

अमले- कर्मचारी मण्डल

महत्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या

1.

नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी कमाई हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्त्रोत है जिससे सदैव प्यास

© JCERT not to be republished

बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी सहायता को देखो और अवसर को देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरज़वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है। लेकिन बेगरज़ को दाँव पर पाना ज़रा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्म भर की कमाई है।

I. प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। बाबू वंशीधर बेरोजगार थे। जब वे रोजगार के लिए घर से निकले तो उनके अनुभवी पिता ने परिवार की दुर्दशा का हवाला देते हुए तथा समाज के रीति-नीति को देखते हुए अपने बेटे को रिश्वत पाने वाली नौकरी प्राप्त करने की सीख दिया। यहाँ उनकी लालच एवं लोगों की मज़बूरी का फायदा उठाने वाली मानसिकता का चित्रण किया गया है।

II. व्याख्या– वंशीधर के पिता ने कहा-बेटे वंशीधर ! तुम नौकरी प्राप्त करने चले हो। मेरी एक सीख सुनते जाओ। नौकरी में ऊँचे या नीचे पद की ओर ख्याल मत करना। पद छोटा भी हो तो स्वीकार कर लेना, क्योंकि नौकरी तो पीर की मज़ार की तरह है जिस पर भेंट, चढ़ावे, चादर आदि रोज चढ़ते ही रहते हैं अर्थात् रिश्वत का माल मिलता ही रहता है। अतः तुम रिश्वत की ओर नज़र रखना बाकी किसी झंझट में न पड़ना। तुम ऐसी ही कोई नौकरी ढूँढना जिसमें खूब रिश्वत मिलने की आशा हो, भ्रष्टाचार के पूरे पूरे आसार हों। मासिक वेतन से कभी घर का गुजारा नहीं चलता। वह पूर्णिमा के चाँद की तरह महीने में एक बार मिलता है और फिर घटते-घटते समाप्त ही हो जाता है। परंतु ऊपर से मिलने वाला धन बहते हुए झरने के समान है जो कभी नहीं सूखता। उससे ज्यादा हमारी प्यास बुझती रहती है। रिश्वत सदा मिलती रहती है। वेतन को देने वाला मनुष्य है, इसीलिए उसमें वृद्धि नहीं होती परंतु ऊपरी आमदनी ईश्वर की देन मानी जाती है। इसलिए उसमें रोजाना वृद्धि होती जाती है। बाकी तुम खुद समझदार हो तुम्हें ज़्यादा समझाने की आवश्यकता नहीं है। इस सिलसिले में बड़ी समझदारी चाहिए। तुम काम के लिए आए आदमी को देखना, उसकी जरूरत को देखना और मौके को भी पहचानना। यदि मौका अच्छा हो, आदमी बहुत ज़रूरतमंद हो और अमीर हो तो खूब रिश्वत ऐंठना। जिसे काम कराने की गरज़ हो। उसके साथ कठोरता का बर्ताव करना। तुम्हें लाभ-ही-लाभ मिलेगा। लेकिन जिसको ज़्यादा गरज़ न हो उस पर दाँव न चलाना। वह रिश्वतखोरी में नहीं फँसता। मेरी यह सीख अच्छी तरह मन में धारण कर लो। मेरे जीवन-भर का बस यही अनुभव है। इसे अपना लो।

III विशेष– लेखक ने वंशीधर के पिता के माध्यम से लोगों की विकृत मानसिकता को उजागर किया है।

© JCERT not to be republished

2.

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले- चलो, हम आते हैं। यह कहकर पंडितजी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले-बाबूजी, आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाडियाँ रोक दी गईं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।

I. प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। सत्यनिष्ठ दरोगा वंशीधर ने पंडित अलोपीदीन जैसे रसूखदार व्यक्ति की गाड़ियों को रोक लिया था। पंडित जी के धनवान पर होने वाले घमंड का चित्रण है।

II. व्याख्या - पंडित अलोपीदीन जी को धन की महिमा पर बहुत विश्वास था। उन्हें भरोसा था कि रिश्वत देने पर बड़े से बड़े काम निकल जाते हैं। वे अक्सर यह कहा करते थे कि ऐसे संसार में तो सब धन की महिमा के आगे झुकती ही हैं, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का राज्य है। अतः वे धन के बलबूते पर स्वर्ग में भी स्थान पा जाएंगे। उनका यह कथन बिल्कुल सत्य था। उन्होंने वास्तव में दुनिया को धन के बदले बिकते देखा था। उनका यह कहना था कि न्याय और नीति सब धन के आगे खिलौनों की तरह है। धन की ताकत के आगे यह खिलौनों कीभाँति नाचते हैं। ऐसा विचार करके लेटे ही लेटे संदेशवाहक से बोले- 'तुम चलो दरोगा को बताओ कि हम अभी आ रहे हैं। ' ऐसा कहकर उन्होंने बड़ी बेफिक्री से पान के बीड़े लगाए और उन्हें चबाया। फिर चादर ओढ़कर दरोगा के पास आकर धूर्ततापूर्वक बोले- बाबूजी, आपका आशीर्वाद चाहिए। हमसे कोई अपराध हो गया हो तो बताइए। हमारी गाडियाँ क्यों रोक दी गई है। हम ब्राह्मण हैं। हम पर आपकी कृपा होनी चाहिए। बंशीधर पंडित अलोपीदीन की धूर्ततापूर्ण बातों को सुनकर कठोरता से बोले - मुझे सरकार की ओर से आदेश हुआ है कि आप की गाड़ियों की जांच-पड़ताल की जाए।

III.विशेष-

'हम ब्राह्मण हैं हम पर विशेष कृपा होनी चाहिए'पंक्ति में लेखक ने आलोपीदीन के माध्यम से तथाकथित उच्च जाति के लोगों की विकृत मानसिकता का चित्रण किया है।

धन के घमंड कैसे सर चढ़कर बोलता है इसकी सुंदर बानगी प्रस्तुत हुआ है।

3.

पंडित अलोपीदीन ने हँसकर कहा- हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आप से बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नयी उमंग थी। कड़ककर बोले-हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं।

आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फ़ुरसत नहीं है। जमादार बदलू सिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

I. प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। गद्यांश में लेखक ने आलोपीदीन के माध्यम से उन लोगों की मानसिकता का पर्दाफाश किया है जो अपना काम निकालने के लिए लोगों की खुशामद तक करने को तैयार रहते हैं उनका काम येन केन प्रकारेण धन प्राप्त करना होता है। साथ ही वंशीधर के माध्यम से ये बताना चाहते हैं कि अभी भी ईमानदार लोग हैं।

II. व्याख्या– पंडित अलोपीदीन को धन पर इतना विश्वास था कि धन से किसी को भी खरीदा जा सकता है वे अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए किसी की खुशामद करने के लिए तैयार हो जाते थे। किसी भी तरह पैसा कमाना उसका लक्ष्य था। जब वे नमक की कालाबाजारी में फँस गए तो दारोगा बंशीधर से अपना घरेलू संबंध बताने लगे और कहने लगे कि हम किसी भी तरह की सरकारी आदेश को नहीं जानते हम केवल आपको ही जानते हैं। आप ही हमारे मालिक हैं। आपको यहाँ आने का कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं थी। आपको अपना हिस्सा मिल जाता। मैं आपकी सेवा में आ ही रहा था। पंडित आलोपीदीन के इस खुशामद भरी बातों का वंशीधर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। नए-नए नौकरी में आए थे। बंशीधर बेहद ईमानदार थे उसने अलोपीदीन से कठोरता से पेश आया और कहा कि मैं नमक हराम नहीं हूँ जो कि अपना ईमान बेच दें मेरा काम सरकार द्वारा दिया गया कर्तव्य निभाना है और आप उसका उल्लंघन कर रहे हैं इसलिए आप को गिरफ्तार करना मेरा कर्तव्य है। आपको जेल जाना होगा मैं और कुछ बात नहीं करना चाहता ऐसा कहते हुए बबलू सिंह को पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करने के लिए आदेश देता है।

III. विशेष–

एक ईमानदार दारोगा और एक रसूखदार व्यक्ति का संवाद गठन सुंदर बन पड़ा है।

4.

धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव - दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल उछलकर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हज़ार तक नौबत पहुँची, किंतु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था। "अलोपीदीन निराश होकर बोले- अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।

© JCERT not to be republished

I. प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। गद्यांश में लेखक ने धन और धर्म की लड़ाई में धर्म का पलड़ा भारी दिखाया है। जिसमें धन का प्रतिनिधित्व आलोपीदीन और धर्म का प्रतिनिधित्व वंशीधर कर रहे हैं।

II. व्याख्या– वंशीधर को प्रबंधित करना आसान नहीं था वंशीधर पंडित आलोपीदीन को बुद्धिहीन नज़र आ रहा था क्योंकि आज तक ऐसा ईमानदार आदमी वो देखा ही नहीं था। वंशीधर के कर्तव्यनिष्ठा देखकर अलोपीदीन का मन खीझने लगा। सोचा कि ऐसा त्याग तो देवों में भी दुर्लभ है। धर्म और धन में, कर्तव्य और लालच में, सत्य और असत्य में, युद्ध होने लगा। पंडित अलोपीदीन ने रिश्वत के रूप में एक हजार रुपये की राशि को बढ़ाकर धीरे-धीरे बीस हजार रुपये कर दिया। परन्तु इतने पर भी दारोगा फिर भी अडिग था। उसकी धर्मनिष्ठा तेजस्वी वीर के समान धन की इस बहु शक्तिशालिनी सेना के सम्मुख लड़ती रही। उसका विश्वास पर्वत के समान अटल था। अतः वह बिना रिश्वत के फेर में पड़े अपनी ईमानदारी पर अड़ा रहा। वह बिका नहींऔर न ही उसने पंडित अलोपीदीन को छोड़ा।

III. विशेष–

वंशीधर के माध्यम से लेखक का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद सामने आया है।

5.

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक - वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडितजी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोज़नामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफ़र करनेवाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज़ बनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब के सब देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभभरे, लज्जा से गरदन झुकाए अदालत की तरफ़ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा। किंतु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील - मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना माल के गुलाम थे।

I. प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। लेखक ने गद्यांश में यह संदेश देना चाहा है कि दुनिया में भ्रष्टाचार में लिप्त लोग भी दूसरे भ्रष्टाचारी के पकड़े जाने पर खुश होते हैं। उन्हें हमेशा ये

© JCERT not to be republished

लगता है कि उनकी बारी कभी नहीं आएगी। साथ ही थोड़े धन के लिए ईमान बेचने वाले सरकारी कर्मियों का चित्रण किया है।

II. व्याख्या– पंडित अलोपीदीन को दारोगा बंशीधर ने नमक की चोरी में गिरफ्तार किया। लोगों में अलोपीदीन को लेकर तरह-तरह की बातें होने लगी जीवन भर भ्रष्टाचार करने वाले लोग भी उनके इस व्यवहार की निंदा करने लगे। ऐसा लग रहा था मानो संसार में अब पापी बचा ही नहीं है। कुछ का उदाहरण देते हुए मुंशी प्रेमचंद जी लिखते हैं कि दूध में अत्यधिक पानी मिलाकर बेचने वाले ग्वाले, फर्ज़ी दैनंदिनी भरने वाले अधिकारी, रेल में बिना टिकट के सफर करने वाले बाबू लोग, नकली दस्तावेज़ बनाने वाले सेठ साहूकार, ये सब मानो देवता बने बैठे थे। लेखक आगे लिखते हैं कि आलोपीदीन के हाथों में हथकड़ी था। लज्जा से गर्दन झुका हुआ था। लोग उनको पापी की तरह देख रहे थे। मेले की तरह भीड़ लगी हुई थी। लोग छत और दीवारों में चढ़े हुए थे। अदालत पहुँचते ही अलोपीदीन ने अदालत के सभी अधिकारी कर्मचारी जो भ्रष्ट थे उन्हें पैसों के बल खरीद लिए। आलोपीदीन को वहाँ के लोग पहले से जानते थे क्योंकि वे सब रिश्वतखोर थे।

III. विशेष–

गद्यांश में दुनिया के यथार्थ का चित्रण है कि कैसे लोग रिश्वत तो लेते हैं लेकिन दूसरों के फँसने पर तमाशा भी देखते हैं।

6.

वकीलों ने यह फ़ैसला सुना और उछल पड़े। पंडित अलोपीदीन मुसकुराते हुए बाहर निकले। स्वजन-बांधवों ने रुपयों की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर से उनके ऊपर व्यंग्य बाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने 'झुक-झुककर सलाम किए। किंतु इस समय एक-एक कटुवाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। कदाचित् इस मुकदमे में सफ़ल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वता, लंबी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोंगे एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं हैं।

I. प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। लेखक ने गद्यांश में यह बताने की कोशिश की है कि कैसे कई बार झूठ और फ़रेब की जीत हो जाती है और चाटुकार लोग खुश होतें हैं जिससे ईमानदार लोगों का अदालत जैसे संस्था से विश्वास उठने लगता है उन्हें अपनी मेहनत और डिग्रियाँ निरर्थक लगने लगती है।

II. व्याख्या–नमक चोरी के ज़ुर्म में वंशीधर ने पंडित अलोपीदीन को जेल भिजवाया। जब उनको अदालत में पेश किया गया तो उनके द्वारा सभी वकील, जजों एवं संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों को खरीद लिया

गया। जिससे अलोपीदीन को निर्दोष करार देते हुए मुक्त कर दिया गया। जब यह फैसला सुनाया गया तो उनके चाटुकार वकील खुश हो गए। अलोपीदीन मुस्कुराते हुए अदालत से बाहर निकले। उनके प्रियजनों बंधु- बांधवों ने उनसे रुपए लूटे अर्थात् उनके प्रति अलोपीदीन ने बहुत खर्च किए। उनके बंधु-बांधवों ने ऐसा व्यवहार किया जैसे वे बहुत उदार लोग हैं। वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर से उन पर व्यंग्य किया जाने लगा। वंशीधर को लोगों के हर वाक्य ताने जैसे लग रहे थे जिनसे उनके गर्व की आग और प्रज्वलित हो रही थी। आज उन्हें एक विचित्र अनुभव हुआ कि संसार कितना स्वार्थी है। धन के आगे बड़ी-बड़ी उपाधियाँ, न्याय, विद्वता, सत्य ईमान सब बौने नजर आ रहे थे वो।

III. विशेष-

वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था का सजीव चित्रण है।

' जिसकी लाठी उसकी भैंस' मुहावरे चरितार्थ होती दिख रही है।

लेखक ने चित्रण किया है कि ईमानदार व्यक्ति को कैसे अदालत जैसी संस्थाओं द्वारा निराशा हाथ लगती है।

7.

वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य-परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुड़- बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था लेकिन इसने एक न सुनी। सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहाँ बस वही सूखी तनख्वाह ! हमने भी तो नौकरी की है, और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दीया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर ! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरावस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिताजी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले-जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ। बहुत देर तक पछता - पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्धा माता को भी दु:ख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने तो कई दिनों तक सीधे मुँह से बात भी नहीं की।

I. प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। लेखक ने गद्यांश में यह बताने की कोशिश की है कि कैसे कई बार झूठ और फ़रेब की जीत हो जाती है और चाटुकार लोग खुश होतें हैं हद तो तब हो जाती है जब अपने ही माँ-बाप, पत्नी एवं सगे-संबंधी भी ईमानदार को अपराधी की तरह हेय दृष्टि से देखते हैं।

II. व्याख्या– अलोपीदीन को गिरफ्तार करना वंशीधर को महँगा पड़ रहा था। लेखक कहते हैं कि वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था में भी वंशीधर ने एक धनवान व्यक्ति से दुश्मनी मोल ले ली थी। उनको तो मूल्य चुकाना अनिवार्य था। मुश्किल से एक सप्ताह बीता कि निलंबन का आदेश जारी हो गया। उन्हें उनकी कर्तव्य-परायणता एवं ईमानदारी का दंड मिल रहा था। बेचारे बंशीधर टूटे दिल से दुख और पीड़ा से व्यथित घर चला। उनके पिताजी पहले से उनके संबंध में कुड़-बुड़ रहे थे। वे बोल रहे थे कि चलते चलते लड़का को समझाया था लेकिन इसने मेरी एक ना सुनी। यह मनमानी करता रहा। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भक्त बने बैठे हैं। वहाँ भी बस वही सुखी तनख्वाह। उनके पिताजी सोचते हैं कि मैंने भी तो नौकरी की है लेकिन काम किया दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले। घर की स्थिति कैसी भी हो दुनिया को बदलने चले। जैसे दुनिया का ठेका इन्हीं ने लिया है। ऐसी समझ, ऐसी पढ़ना- लिखना धिक्कार है इसको। थोड़े दिन बाद वंशीधर घर पहुँचे। वे बहुत दुखी थे। बूढ़े पिता जी को पछतावा हो रहा था। उनका मन करता था कि वंशीधर को मार डालें। मुंशी जी को गुस्से में देखकर वंशीधर वहाँ से चले गए। माता जी को भी दुख हुआ क्योंकि उनको तीर्थ यात्राएँ करनी थी जो पूरी नहीं हो पायी। पत्नी तो उनसे बहुत दिनों से बात ही नहीं की। लेखक यहाँ यह कहना चाह रहे हैं कि ईमानदार व्यक्ति को दूसरे द्वारा सज़ा तो मिल ही जाती है लेकिन कभी-कभी परिवार द्वारा उपेक्षा कर का शिकार होना पड़ता है जिससे आदमी टूट जाता है।

III. विशेष–

परिवार के स्वार्थीपन का चित्रण सजीव बन पड़ा है।

8.

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले–न मुझे विद्वता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य-कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चम्क फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, अधिक सोच-विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपकोसदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे! वंशीधर की आँखें डबडबा आईं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसान न समा सका। एक बार फिर पंडितजी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें गले लगा लिया।

I. प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1के 'नमक का दरोगा' पाठ से लिया गया है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हैं। लेखक ने गद्यांश में यथार्थ को आदर्श की ओर उन्मुख कर दिया है ताकि पाठक नग्न यथार्थ से निराशावादी न हो जाए। असत्य पर सत्य का विजय दिखाना कहानी का प्रमुख संदेश है।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

II. व्याख्या – अलोपीदीन को अपनी किए पर पश्चाताप हुआ। अब वे ईमानदारी की कीमत पहचान लिए थे। एक दिन वंशीधर के घर गए और उन्हें उसने अपनी सारी जायदाद का जीवन भर के लिए मैनेजर नियुक्त कर दिया। अब उन्हें मित्रता, अनुभव और कार्यकुशलता की आवश्यकता नहीं रहा क्योंकि ऐसे व्यक्ति उनको मिल गया था। उनको मोती मिल गया था जिनकी चमक के आगे सभी तरह के धन-दौलत, शान-शौकत सब नतमस्तक है अर्थात् उन्हें वंशीधर के रूप में ऐसा व्यक्ति मिल गया था जो किसी भी कीमत पर ईमान का सौदा नहीं करेगा। उसने वंशीधर से निवेदन किया और मैनेजर का पद दिया। अलोपीदीन ने उनकी कर्तव्य-परायणता, सत्य एवं ईमानदारी की तारीफ की। तारीफ सुनकर बंशीधर की आंखें द्रवित हो गई। ऐसा लग रहा था कि उनके हृदय में इतना बड़ा एहसान के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। इस एहसान को कैसे धारण करें। पंडित जी को भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और मनेजर के पद देने संबंधी पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। ईमानदारी और सत्य की विजय एक दिन होकर रहती है। धैर्य धारण किया जाना आवश्यक है।

III. विशेष–

लेखक ने यहाँ एक आदर्श स्थापित किया है ताकि लोग निराशावादी न हो जाए।

पाठ के साथ

प्रश्न. 1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर– हमें इस कहानी का पात्र वंशीधर सबसे अधिक प्रभावित करता है। वह ईमानदार, शिक्षित, कर्तव्यपरायण व धर्मनिष्ठ व्यक्ति है। उसके पिता उसे बेईमानी का पाठ पढ़ाते हैं, घर की दयनीय दशा का हवाला देते हैं, परंतु वह इन सबके विपरीत ईमानदारी का व्यवहार करता है। वह स्वाभिमानी है। अदालत में उसके खिलाफ गलत फैसला लिया गया, परंतु उसने स्वाभिमान नहीं खोया। उसकी नौकरी छीन ली गई। कहानी के अंत में उसे अपनी ईमानदारी का फल मिला। पंडित अलोपीदीन ने उसे अपनी सारी जायदाद का आजीवन मैनेजर बनाया।

प्रश्न. 2. नमक का दारोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?

उत्तर– पं. अलोपीदीन अपने क्षेत्र के नामी-गिरामी सेठ थे। सभी लोग उनसे कर्ज लेते थे। उनको व्यक्तित्व एक शोषक-महाजन का सा था, पर उन्होंने सत्य-निष्ठा का भी मान किया। उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

1. लक्ष्मी उपासक — उन्हें धन पर अटूट विश्वास था। वे सही-गलत दोनों ही तरीकों

© JCERT not to be republished

से धन कमाते थे। नमक का व्यापार इसी की मिसाल है। साथ ही वे कठिन घड़ी में धन को ही अपना एकमात्र हथियार मानते थे। उन्हें विश्वास था कि इस लोक से उस लोक तक संसार का प्रत्येक काम लक्ष्मी जी की दया से संभव होता है। इसीलिए वंशीधर की धर्मनिष्ठा पर उन्होंने उछल-उछलकर वार किए थे।

2. ईमानदारी के कायल — धन के उपासक होते हुए भी उन्होंने वंशीधर की ईमानदारी का सम्मान किया। वे स्वयं उसके द्वार पर पहुँचे और उसे अपनी सारी जायदाद सौंपकर मैनेजर के स्थाई पद पर नियुक्त किया। उन्हें अच्छा वेतन, नौकर-चाकर, घर आदि देकर इज़्ज़त बख्शी।

प्रश्न. 3. कहानी के लगभग सभी पात्र समाज की किसी-न-किसी सच्चाई को उजागर करते हैं। निम्नलिखित पात्रों के संदर्भ में पाठ से उस अंश को उद्धृत करते हुए बताइए कि यह समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं-

(क) वृद्ध मुंशी

(ख) वकील

(ग) शहर की भीड़

उत्तर- (क) वृदध मुंशी-यह वंशीधर का पिता है जो भ्रष्ट चरित्र का प्रतिनिधि है। इसे धन में ही सब कुछ दिखाई देता है। यह अपने बच्चों को ऊपर की कमाई तथा आम आदमी के शोषण की सलाह देता है।

पाठ में यह अंश उसके विचारों को व्यक्त करता है-

"उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे-बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ न मालूम कब गिर पड़ूं। अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।"

(ख) वकील- वकील समाज के उस पेशे का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सिर्फ अपने लाभ की फिक्र करते हैं। उन्हें न्याय-अन्याय से कोई मतलब नहीं होता उन्हें धन से मतलब होता है। अपराधी के जीतने पर भी वे प्रसन्न होते हैं-

" वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। स्वजन बांधवों ने रुपयों की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। "

वकीलों ने नमक के दरोगा की चेतावनी तक दिलवा दी-

" यद्यपि नमक के दरोगा। मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उसकी उद्दंडता और विचारहीनता के कारण एक भलेमानस को झेलना पड़ा। नमक के मुकदमे की बढ़ी हुई नमकहलाली

© JCERT not to be republished

ने उसके विवेक और बुद्ध को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए। ”

(ग) शहर की भीड़- शहर की भीड़ तमाशा देखने का काम करती है। उन्हें निंदा करने व तमाशा देखने का मौका चाहिए। उनकी कोई विचारधारा नहीं होती। अलोपीदीन की गिरफ्तारी पर शहर की भीड़ की प्रतिक्रिया देखिए-

“दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछार हो रही थीं. मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पितबनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे। “

प्रश्न. 4. निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए- नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।

(क) यह किसकी उक्ति है?

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

(ग) क्या आप एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत हैं?

उत्तर- (क) यह उक्ति (कथन) नौकरी पर जाते हुए पुत्र को हिदायत देते समय वृद्ध मुंशी जी ने कही थी।

(ख) जिस प्रकार पूरे महीने में सिर्फ एक बार पूरा चंद्रमा दिखाई देता है, वैसे ही वेतन भी पूरा एक ही बार दिखाई देता है। उसी दिन से चंद्रमा का पूर्ण गोलाकार घटते-घटते लुप्त हो जाता है, वैसे ही उसी दिन से वेतन भी घटते-घटते समाप्त हो जाता है। इन समानताओं के कारण मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया है।

(ग) एक पिता के द्वारा पुत्र को इस तरह का मार्गदर्शन देना सर्वथा अनुचित है। माता-पिता का कर्तव्य बच्चों में अच्छे संस्कार डालना है। सत्य और कर्तव्यनिष्ठा बताना है। ऐसे में पिता के ऐसे वक्तव्य से हम सहमत नहीं हैं।

प्रश्न. 5. ‘नमक का दारोगा’ कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कहानी के अन्य शीर्षक हो सकते हैं-

(क) सत्य की जीत-इस कहानी में सत्य शुरू में भी प्रभावी रहा और अंत में भी वंशीधर के सत्य के सामने अलोपीदीन को हार माननी पड़ी है।

© JCERT not to be republished

(ख) ईमानदारी– वंशीधर ईमानदार था। वह भारी रिश्वत से भी नहीं प्रभावित हुआ। अदालत में उसे हार मिली, नौकरी छूटी, परंतु उसने ईमानदारी का त्याग नहीं किया। अंत में अलोपीदीन स्वयं उसके घर पहुँचा और इस गुण के कारण उसे अपनी समस्त जायदाद का मैनेजर बनाया।

प्रश्न. 6– कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अंत किस प्रकार करते?

उत्तर– कहानी के अंत में अलोपीदीन द्वारा वंशीधर को नियुक्त करने का कारण तो स्पष्ट रूप से यही है कि उसे अपनी जायदाद का मैनेजर बनाने के लिए एक ईमानदार मिल गया। दूसरा उसके मन में आत्मग्लानि का भाव भी था कि मैंने इस ईमानदार की नौकरी छिनवाई है, तो मैं इसे कुछ सहायता प्रदान करूँ। अतः उन्होंने एक तीर से दो शिकार कर डाले।

जहाँ तक कहानी से समापन की बात है तो प्रेमचंद के द्वारा लिखा गया समापन ही सबसे ज्यादा उचित है। पर समाज में ऐसा सुखद अंत किसी किसी ईमानदार को ही देखने को मिलता है। अकसर अपमान ही मिलता है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1. दरोगा बंशीधर गैर कानूनी कार्यों की वजह से पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करता है, लेकिन कहानी के अंत में इसी पंडित अलोपीदीन की सहृदयता से मुग्ध होकर उसके यहाँ मैनेजर की नौकरी को तैयार हो जाता है। आपके विचार से बंशीधर का ऐसा करना उचित था? आप उसकी जगह होते तो क्या करते?

उत्तर– बंशीधर का ऐसा करना पूर्णत: उचित था क्योंकि उसने अपने कर्तव्य और ईमानदारी के कारण पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार किया था। पंडित द्वारा उसे नौकरी पर रखना उसकी इन्हीं विशेषताओं का प्रतिफल था। यदि हम बंशीधर की जगह होते तो हम भी नौकरी स्वीकार कर लेते।

प्रश्न 2. नमक विभाग के दरोगा पद के लिए बड़ों बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?

उत्तर– वर्तमान समाज में अनेक ऐसे पर हैं जिन्हें पाने के लिए लोग लालायित रहते हैं। जन्म में एक पुलिसकर्मी, परिवहनकर्मी, सरकारी डॉक्टर, सरकारी विभागों के अफसर, बड़े-बड़े नेताओं के सहायक आदि। लोग इन पदों को पाने के लिए लालायित इसलिए रहते हैं क्योंकि इनमें अच्छी आय के साथ-साथ मान-सम्मान भी मिलता है।

प्रश्न 3. अपने अनुभवों के आधार पर बताइएकि जब आपके तर्कों ने आपके भ्रम को पुष्ट किया हो।

© JCERT not to be republished

उत्तर- एक बार किसी बड़े नेता को एक घटना के कारण पुलिस ने गिरफ्तार किया। लेकिन हमें लगता था कि यह अपने धन और बल के कारण मुक्त हो जाएगा और सचमुच ऐसा ही हुआ।

प्रश्न 4. पढ़ना लिखना सब अकारथ गया। वृद्ध मुंशी जी द्वारा यह बात एक विशेष संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए -

(क) जब आपको पाना लिखना व्यर्थ लगा हो।

(ख) जब आप को पढ़ना लिखना सार्थक लगा हो।

(ग) पढ़ना लिखना को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगा - साक्षरता अथवा शिक्षा? (क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?)

उत्तर- (क) विद्यार्थी स्वयं करें

(ख) विद्यार्थी स्वयं करें

(ग) विद्यार्थी स्वयं करें

प्रश्न 5. 'लड़कियाँ हैं, वे घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती है। ' वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर- समाज में लड़कियों को बोझ माना जाता है क्योंकि उसके बड़े होने पर समाज को उसकी शादी की चिंता सताने लगती है। दहेज के रूप में बहुत राशि देना पड़ता है। मुझे यह आश्चर्य लगता है कि कैसे लोग बेटी को समस्या मानते हैं। समस्या दहेज़ आदि कुरीतियाँ है न कि बेटी। उक्त वाक्य इसी वास्तविकता को प्रकट करता है।

प्रश्न 6. इसीलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। अपने आस-पास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उपरोक्त टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए लिखें।

उत्तर- अपने आसपास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर हमारे मन में यह प्रतिक्रिया होती है कि ऐसे व्यक्ति जो गलत काम करते हैं पकड़े क्यों नहीं जाते हैं। समाज में ऐसे ईमानदार लोगों की क्यों कमी है जो बंशीधर जैसे चरित्रवान हों।

© JCERT not to be republished

समझाइए तो जरा

प्रश्न 1. नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।

उत्तर- वंशीधर के पिता के अनुसार महत्व बड़े पद का नहीं है, ऊपर की कमाई का है। अतः सांसारिक रूप से चालाक, स्वार्थी और समझदार व्यक्ति को ऊपरी आय वाली नौकरी करनी चाहिए।

प्रश्न 2. ऐसे विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथ-प्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था।

उत्तर- भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी के इस युग में वंशीधर जैसे व्यक्ति अपने धैर्य, बुद्धि तथा स्वावलंबन के सहारे ही जी सकते हैं। हमारे चारों ओर भ्रष्टाचार की दलदल है। केवल धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लेने वाले व्यक्ति ही इस दलदल से बच सकता है।

प्रश्न 3. तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया।

उत्तर- जो पहले से ही सोच रहे थे, वह तर्क से स्पष्ट हो गया। वंशीधर को रात को सोते-सोते अचानक पुल पर से जाती हुई गाड़ियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। उन्हें संदेह हुआ कि जरूर इसमें कुछ गैर कानूनी काम होगा। उन्होंने तर्क लगाया कि कोई मनुष्य रात के अंधेरे में गाड़ियाँ क्यों ले जाएगा। यह सोचते ही उनके मन में उठा भ्रम और पक्का हो गया। उन्हें लगा कि जरूर इसमें गोलमाल है।

प्रश्न 4. न्याय और नीतीश और लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।

उत्तर- इसका अर्थ है कि धन के बल पर न्याय और नीति को खिलौने की तरह नचाया जा सकता है। ईमानदार पुरुषों को बेईमान और बेईमान को सज्जन पुरुष सिद्ध किया जा सकता है।

प्रश्न 5. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।

उत्तर- अभी लोग रात में सोए हुए थे कि पंडित अलोपीदीन के गिरफ्तार होने की खबर कानोंकान फैल गई। लोग इस विषय में बातें करने लगे।

प्रश्न 6. खेद ऐसी समझ पर। पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।

उत्तर- वंशीधर के बूढ़े पिता चाहते थे कि बेटा खूब रिश्वत लें, परंतु जब उसने सत्यनिष्ठा का आचरण किया और नौकरी से निलंबित कर दिए गए तो उन्हें लगा की बेटे की पढ़ाई-लिखाई बेकार गई। आखिर उन्होंने भ्रष्टाचार करने के लिए ही तो उसे पढ़ाया था।

प्रश्न 7. धर्म ने धन को पैरों तले कुचल।

उत्तर- चालीस हजार रुपए रिश्वत मिलती देखकर भी कर्तव्यनिष्ठ वंशीधर अपने ईमान पर टिके रहे। इससे ऐसा लगा कि वंशीधर की धर्म की शक्ति नें अलोपीदीन की धन की शक्ति को कुचलकर नष्ट कर दिया।

प्रश्न 8. न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

उत्तर- न्याय के परिसर (अदालत) में वंशीधर की धर्म शक्ति और अलोपीदीन की धन शक्ति में युद्ध छिड़ गया। इधर वंशीधर सत्य मार्ग पर डटा हुआ था। उधर अलोपीदीन रिश्वत के बल पर वंशीधर को खरीदना चाहा लेकिन वे नहीं बिके।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. नमक का दरोगा पाठ के लेखक हैं–

(क) प्रेमचंद

(ख) कृष्ण चंदर

(ग) शेखर जोशी

(घ) कृष्ण नाथ

उत्तर– (क) प्रेमचंद

2. किस ईश्वर प्रदत्त वस्तु का व्यवहार करना निषेध हो गया था?

(क) जल

(ख) वायु

(ग) नमक

(घ) धरती

उत्तर– (ग) नमक

3. किनके पौ बारह थे–

(क) गृहणियों के

(ख) अधिकारियों के

(ग) पतियों के

(घ) बच्चों के

उत्तर– (ख) अधिकारियों के

4. नमक विभाग में दारोगा के लिए कौन ललचाते थे?

(क) डॉक्टर

(ख) प्रोफ़ेसर

(ग) इंजीनियर

(घ) वकील

उत्तर– (घ) वकील

5. नमक विभाग में किसे दारोगा की नौकरी मिली?

(क) अलोपीदीन को

(ख) वंशीधर को

(ग) दाता दिन को

(घ) मातादीन को

उत्तर– (ख) वंशीधर को

6. दुनिया सोती थी पर दुनिया की....... जागती थी।

(क) आस

(ख) कान

(ग) जीभ

(घ) नाक

उत्तर– (ग) जीभ

7. किसका लाखों का लेनदेन था?

(क) बंशीधर का

(ख) मुरलीधर का

(ग) अलोपीदीन का

© JCERT not to be republished

(घ) वृद्ध मुंशी जी

उत्तर- (ग) अलोपीदीन का

8. अलोपीदीन को दरोगा को किसके बल पर खरीद लेने का विश्वास था?

(क) उनके ऊपर के अधिकारियों को खरीद कर बाहुबल से

(ख) रिश्वत से

(ग) अच्छे संबंध बनाकर

(घ) रिश्वत से

उत्तर- (घ) रिश्वत से

9. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के खिलौने हैं यह कथन किसका है?

(क) वंशीधर

(ख) अलोपीदीन

(ग) बबलू सिंह

(घ) वंशीधर के पिता

उत्तर- (ख) अलोपीदीन

10'. नमक का दारोगा' मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित एक, ... है

(क) जीवनी

(ख) निबंध

(ग) कहानी

(घ) नाटक

उत्तर- (ग) कहानी

11'. नमक का दरोगा' कहानी का मुख्य पात्र है-

(क) अलोपीदीन

(ख) वृद्ध मुंशी जी

(ग) न्यायाधीश

(घ) वकील

उत्तर- वंशीधर

12. मासिक वेतन को क्या कहा है?

(क) चाँद

(ख) अमावस्या का चाँद

(ग) सूर्य

(घ) पूर्णमासी का चाँद

उत्तर- (घ) पूर्णमासी काचाँद

13. घाट के देवता को भेंट चढ़ाने से क्या तात्पर्य है

(क) भगवान को भोग लगाना

(ख) नदी किनारे श्राद्ध करन

(ग) ब्राह्मण को दान देना

(घ) संबंधित अधिकारी को रिश्वत देना

उत्तर- (घ) संबंधित अधिकारी को रिश्वत देना

14. अलोपीदीन अंत में कितनी रिश्वत देने के लिए तैयार हो गए?

(क) 5000

(ख) 10000

© JCERT not to be republished

(ग) 20000

(घ) 40000

उत्तर- (घ) 40000

15. पंडित अलोपीदीन की गिरफ्तारी का क्या परिणाम हुआ?

(क) अलोपीदीन को जेल में डाला गया

(ख) बंशीधर को जेल में डाला गया

(ग) वंशीधर की नौकरी चली गई

(घ) अलोपीदीन का कारोबार चौपट हो गया

उत्तर- (ग) वंशीधर की नौकरी चली गई

16. नमक का दरोगा कहानी से सीख मिलती है कि व्यक्ति को

(क) लक्ष्मी का पुजारी होना चाहिए

(ख) रिश्वत लेनी चाहिए

(ग) ऊपरी आमदनी होनी चाहिए

(घ) धर्म परायण रहना चाहिए

उत्तर- (घ) धर्म परायण रहना चाहिए

17. मुंशी वंशीधर की अलोपीदीन पर विजय किसका प्रतीक है

(क) अधर्म पर धर्म की

(ख) असत्य पर सत्य की

(ग) बेईमानी पर ईमानदारी की

(घ) सभी की

उत्तर- (घ) सभी की

18. प्रेमचंद की इस रचना में मिलता है

(क) आदर्शवाद

(ख) यथार्थवाद

(ग) कल्पनावाद

(घ) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

उत्तर- (घ) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

19. मुंशी वंशीधर की सर्वप्रमुख विशेषता क्या है

(क) पिता की तरह नहीं बनना

(ख) स्वयं निर्णय लेना

(ग) आत्मविश्वास रखना

(घ) सच पर अटल रहना

उत्तर- (घ) सच पर अटल रहना

20. वंशीधर के पिता के विचार से ऊपरी आय क्या है?

(क) पीर का मजार

(ख) बहता स्रोत

(ग) खिलौना

(घ) चंद्रमा

उत्तर- (ख) बहता स्रोत

21. मुकदमा चलाने पर अदालत में किसे दोषी ठहराया?

(क) वंशीधर

(ख) अलोपीदीन

© JCERT not to be republished

(ग) वकील

(घ) किसी को भी नहीं

उत्तर- (क) वंशीधर

22. पंडित अलोपीदीन कौन थे?

(क) दरोगा

(ख) न्यायाधीश

(ग) जमींदार

(घ) किसान

उत्तर- (ग) जमींदार

23. वंशीधर की ईमानदारी से प्रभावित होकर अलोपीदीन ने उन्हें किस पद पर नियुक्त किया?

(क) चौकीदार के पद पर

(ख) बावर्ची के पद पर

(ग) अकाउंटेंट के पद पर

(घ) मैनेजर के पद पर

उत्तर- (घ) मैनेजर के पद पर

© JCERT not to be republished